पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

राज्यपाल ने पुस्तक 'प्रो0 फजले इमाम - अदबी सफर के साठ साल' का लोकार्पण किया

प्रदेश की दूसरी सरकारी भाषा उर्दू का ज्यादा से ज्यादा विकास हो - श्री नाईक

लखनऊ 14 फरवरी, 2016

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक कहा है कि प्रदेश में उर्दू और हिन्दी भाषा के संवर्धन के लिए बने संस्थान एक दूसरे की अच्छी पुस्तकों का अनुवाद करके प्रकाशित करें तो हिन्दी और उर्दू और नजदीक आयेंगी। दोनों भाषाओं में अनुवाद होने पर पाठकों की भी रूचि बढेगी, जिसके फलस्वरूप दोनों भाषाओं को लाभ भी होगा। त्रिभाषीय शिक्षा पद्धति अपनाये जाने की मांग पर उन्होंने कहा कि कुलाधिपति की हैसियत से उनके पास ऐसा कोई प्रस्ताव आयेगा तो वे कुलपतियों से चर्चा करके योग्य निर्णय लेंगे। उन्होंने कहा कि जीवन बनाने में उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है इसलिए सभी भाषाओं का समान सम्मान होना चाहिए।

राज्यपाल आज राय उमानाथबली प्रेक्षागृह में उर्दू रायटर फोरम द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में डा॔0 शबीह सुगरा की पुस्तक 'प्रो0 फजले इमाम - अदबी सफर के साठ साल' के लोकार्पण समारोह में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। इस अवसर पर प्रो0 फजले इमाम, प्रो0 शारिब रूदौलवी, डा॔0 आफताब रज़ा, श्री अनीस अंसारी सहित बड़ी संख्या में उर्दू विद्वान उपस्थित थे। राज्यपाल ने कहा कि प्रो0 फजले इमाम साहब का व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों सराहनीय हैं, उनको किताब में उतारना वास्तव में मुश्किल काम है। यह काम डा॔0 शबीह ने किया इसलिए वे अभिनंदन करने के योग्य हैं।

श्री नाईक ने लोकार्पण के उपरान्त अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिन्दी के बाद सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा उर्दू है। उर्दू भाषा एवं उर्दू पत्रकारिता ने भी देश की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। देश की आजादी और विकास में भाषा का महत्व होता है। यह महत्व समझने के लिए हमें मेरी-तेरी भाषा नहीं बल्कि हमारी भाषा को समझना होगा। हिन्दी, मराठी, गुजराती, उर्दू आदि सभी भारतीय भाषाएं हैं। इसमें बड़ी छोटी भाषा का हिसाब नहीं किया जा सकता। अलग-अलग समय पर भाषाएं आयी हैं लेकिन उनका भाव एक-दूसरे का जोड़ना है। उन्होंने कहा कि भाषा जोड़ने का काम करती है।

राज्यपाल ने कहा कि 'सच बोलना है तो मैं उर्दू नहीं जानता, यदि कोई मुझे उर्दू सिखाये तो मैं भी पाँच-दस लाईने उर्दू में बोलूं।' अपने देश की भाषा जब अस्मिता से जुड़ जाती है उसका सबको सम्मान करना चाहिए। प्रदेश की दूसरी सरकारी भाषा उर्दू का ज्यादा से ज्यादा विकास हो, ऐसा मेरा प्रयास है। उन्होंने कहा कि साहित्य सृजन करने वालों के प्रति समाज कृतज्ञता प्रकट करें।

प्रो0 शारिब रूदौलवी ने प्रो0 फजले इमाम की प्रशंसा करते हुए कहा कि अगली पीढ़ी उनके सृजन से शोध और तहजीब का सलीका सीख सकती है। प्रो0 फजले इमाम ने साहित्य के कारवाँ और उसूलों को बढ़ाने का काम किया है। उन्होंने कहा कि साहित्य के साथ-साथ उन सामाजिक विषयों को भी देखें जिस पर प्रो0 फजले इमाम ने काम किया है तो किताब के साथ इंसाफ होगा।

प्रो0 फजले इमाम ने कहा कि किसी जबान ने धर्म को जन्म नहीं दिया है न ही किसी धर्म ने जबान को बनाया है। धर्म को भाषा में और भाषा को धर्म में नहीं बांटा जा सकता। अदब का रिश्ता समाज से है जिसकी आत्मा को समझने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि साहित्य को जिन्दा रखने के लिए समाज से जुड़ना होगा।

कार्यक्रम में श्री अनीस अंसारी, श्री आफताब रज़ा, डा॔0 शबीह सुगरा, श्री दुर्रे हसन सहित अन्य लोगों ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन डा॔0 अब्बास रज़ा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री वकार रिज़वी द्वारा दिया गया।

अंजुम/ललित/राजभवन(58/17)

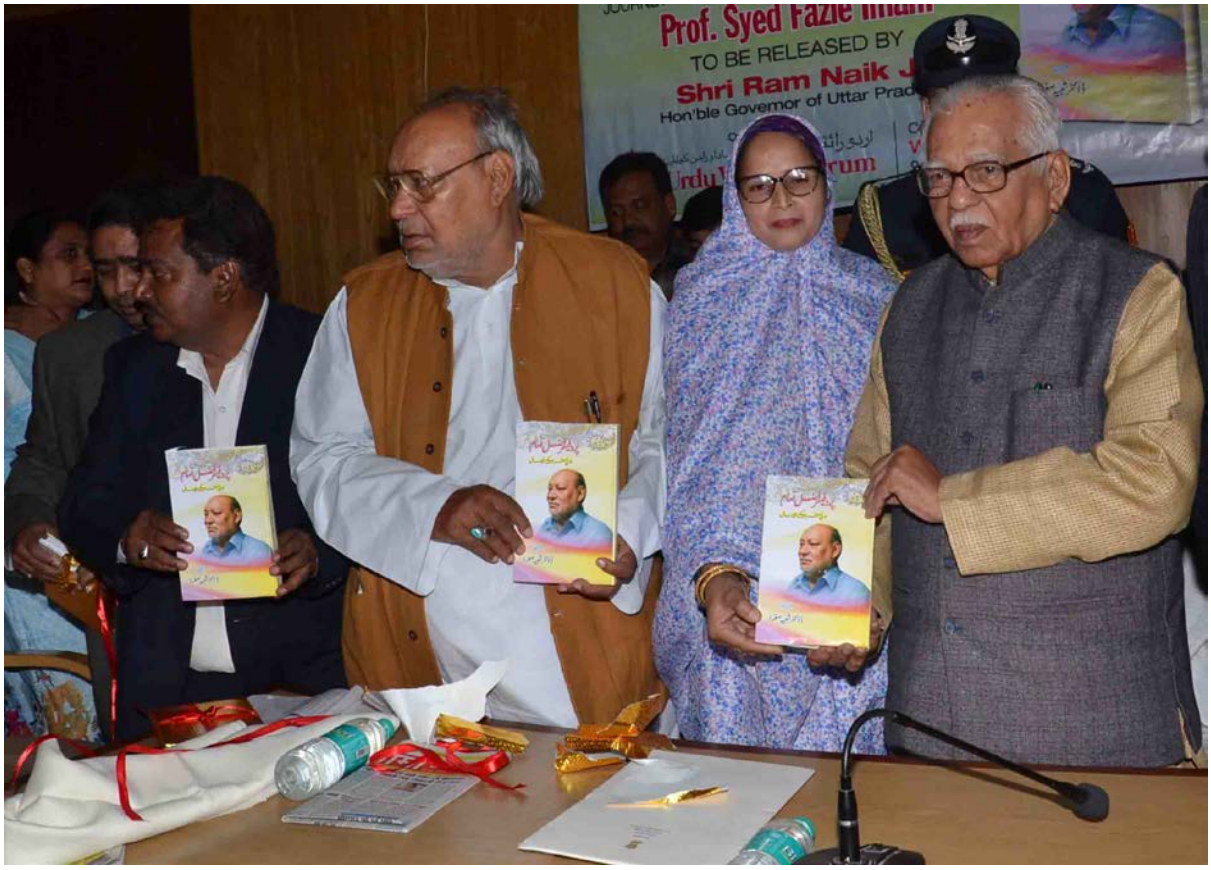

A BOOK BY
Dr. Shabih Sughra
ON LIFE, DEEDS AND SIXTY YEARS OF LITERARY
JOURNEY OF NOTED SCHOLAR, CRITIC AND TEACHER
Prof. Syed Fazie Imam
TO BE RELEASED BY
پروفیسر فضل امام ادبی سفر کے ساٹھ سال
مرتبہ ڈاکٹر شبیہ صغرا کی رسم اجراء

ORGANIZED BY

A BOOK BY
Dr. Shabih Sughra
ON LIFE, DEEDS AND SIXTY YEARS OF LITERARY JOURNEY OF NOTED SCHOLAR, CRITIC AND TEACHER
Prof. Syed Fazie Imam
TO BE RELEASED BY
Shri Ram Naik Ji
Hon'ble Governor of Uttar Pradesh
Urdu Writers' Forum
کے کارناموں اور شخصیت کے بارے میں مرتبہ کتاب
پروفیسر فضل امام ادبی سفر کے ساٹھ سال
مرتبہ ڈاکٹر شبیہ صغرا کی رسم اجراء
رام نائک جی، گورنر اتر پردیش